आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received:02\12\2021; Accepted:13\12\2021; Published:24\12\2021

वृद्ध विमर्श और 'हंसा ताई'

नीलम वाधवानी
हिन्दी विभाग, भाषा साहित्य भवन
गुजरात यूनिवरसिटि, अहमदाबाद
ई मेल- vishnukriplani36@gmail.com
Phone: 8401224237

नीलम वाधवानी, **वृद्ध विमर्श और 'हंसा ताई'**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021,(136-141)

गुजरात के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. दिलीप मेहरा 'साहित्य वीथिका' पत्रिका के प्रधान संपादक तथा सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, आणंद में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में आचार्य पद पर आसीन हैं । इक्कीस आलोचना ग्रंथ तथा संपादित पुस्तकों द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध करने वाले डॉ. दिलीप जी को अब तक सात से अधिक पुरस्कार एवं उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है। "मकान पुराण" कहानी संग्रह लेखक के अनुभवों का ऐसा दस्तावेज है जिसे पढ़ते समय पाठक संपूर्ण मानव जाति की संवेदनाओ से आप्लावित हो जाता है।

हाल ही में 'वांग्मय' पत्रिका जनवरी-मार्च 2021 अंक में डॉ.दिलीप मेहरा द्वारा रचित 'हंसा ताई' कहानी प्रकाशित हुई है। ग्रामीण परिवेश से जुड़ी कहानी हंसा ताई एक साधारण-सी स्त्री हंसा तथा उसके परिवार की कहानी है। हंसा एक ऐसी स्त्री है जिसने कभी किसी परिस्थिति में हार नहीं मानी । खेती-बाड़ी करने वाली साधारण सी यह स्त्री वैधव्य में भी कभी किसी का सहारा नहीं ढूंढती। अपने जीवन में बड़े से बड़ा संघर्ष करके भी सदा समाज में प्रतिष्ठित रहने वाली हंसा वृद्धावस्था में आकर पुत्र तथा बहू के व्यवहार से अत्यंत दुखी रहने लगती है किंतु, कभी उनका विरोध नहीं करती। उसके मन में सदा ही एक आशा जीवित बनी रहती है कि आज नहीं तो कल मेरा पुत्र और बहू मुझे स्वीकार कर लेंगे तथा मैं अपने पोते पोतियों के साथ अपने परिवार में रह सकूंगी। कहानी में हंसा तथा उसका भाई दोनों ही वृद्ध पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई

देते हैं। यहां लेखक ने बताया है कि ग्रामीण परिवेश में रहने वाली हंसाताई जो अपने ही पुत्र नारसिंह एवं पुत्रवधू रेवा से बुरी तरह प्रताड़ित है जबकि शहर में रहने वाला हंसाताई का भाई वृद्ध होने के बावजूद भी घर का मुखिया है। जिसका पुत्र शरदसिंह एक आज्ञाकारी पुत्र है वह शिक्षित एवं समाज सुधारक है।

कहानी का मुख्य भाग हंसाताई द्वारा नारसिंह के विवाह की चिंता से आरंभ होता है। हंसा ताई द्वारा बहुत प्रयत्न करने पर भी जब नारसिंह का विवाह कहीं तय नहीं हो पाता तब हंसाताई अपने भाई से प्रार्थना करती है कि "भाई! आपका हमारे समाज में कितना बड़ा नाम है। मेरी जिंदगी की एक ही मुराद है कि मेरे नारिये का कहीं ब्याह करा दो। अगर यह काम मेरा आपने कर दिया तो मैं हमेशा हमेशा के लिए आप की ऋणी रहूंगी"1 तब शरद पिता की आज्ञा मानते हुए बढ़-चढ़कर इस कार्य में हिस्सा लेता है तथा नारसिंह का विवाह करवाता है। विवाह का सारा खर्चा भी शरद ही उठाता है। हालांकि शरद नारसिंह का विवाह कराने से पूर्व फूफी हंसा को सचेत भी करता है कि आपका पुत्र किसी भी तरह योग्य नहीं है मंदबुद्धि है ।हो सकता है कि आप यह विवाह करा कर स्वयं मुसीबत मोल ले लें जिसे हंसा नहीं मानती । अंततोगत्वा शरदसिंह द्वारा कही गई यह बात सत्य सिद्ध होती है। हंसा की पुत्र वधू रेवा अपनी सास के साथ अमानवीय व्यवहार करती है एवं बात बात पर उसे प्रताड़ित करती है । लेखक लिखता है "जिस हंसा को उसके पति ने कभी डांटा नहीं था उसे आज उसकी बहू रोज पूरे गांव के बीच पीटती थी।"2 हर परिस्थिति से डटकर मुकाबला करने वाली हंसा आज अपने ही घर पर अपने ही घर की समस्याओं को सुलझाने में नाकाम सी हो गई थी। माता-पिता अपने बच्चों से इतना प्रेम एवं स्नेह करते हैं कि कभी उनसे विरोध के बारे में सोच ही नहीं पाते विरोध तो क्या वह अपने अधिकारों की मांग भी नहीं कर पाते । विरोध करें भी तो किनका ? जिन बच्चों को माता पिता ने अंगुली पकड़कर चलना सिखाया वे चलते चलते इतने आगे बढ़ गए कि जब माता-पिता को उनके सहारे की आवश्यकता अनुभव हुई तब उन्होंने अपने माता-पिता की सिर्फ छड़ी ही नहीं छीनी बल्कि उन्हें गिरने पर मजबूर कर दिया। ऐसी ही पथभ्रष्ट युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व नारसिंह तथा उसकी पत्नी रेवा करते हुए कहानी में देखे जा सकते हैं ।

दूसरी ओर हंसा का भतीजा शरद कहानी में युवा वर्ग के उस रूप का प्रतिनिधित्व करता है जो आज भी वृद्धों का सम्मान तथा आदर बनाए रखने के पक्ष में है । शरद हंसाताई के हर दुख एवं हर समस्या को समझता है। हंसाताई की दयनीय स्थिति का समाचार मिलते ही मदद करना चाहता है । "मंझला लड़का शरदसिंह अपने मित्र को लेकर हंसा के गांव में ताबड़तोड़ आता है .... चलो हंसा फूफी हमारे घर चलो हम आपको लेने आए हैं।"3 किंतु हंसा शरद के साथ जाने से यह कहते हुए मना कर देती है "मेरा ही रुपया खोटा है फिर मैं क्या कर सकती हूं।"4

'हंसा ताई' के माध्यम से हमें एक मां की पुत्र के प्रति जो निष्कपट एवं पवित्र ममता है उसका दर्शन होता है। सब दुखों को सहन करके भी अपने पुत्र के लिए सिर्फ मंगल कामना करना और हमेशा आशीर्वाद देना । बदले में स्वयं के साथ होने वाले हर अनुचित व्यवहार को इस तरह भूल जाना कि कुछ हुआ ही ना हो। अपनी पुत्रवधू से मार खाकर भी मन में यह भाव रखना कि कम से कम मेरा पुत्र कुंवारा तो नहीं रहा। यही नहीं बहू द्वारा घर से निकाल दिए जाने पर मन में यह भाव रखना की चचेरी बहन की बेटी के घर रह जाती हूं ।जो कि मेरे घर के सामने ही है । ऐसे में मैं अपने पोते पोती को देखती रहूंगी । इसी में अंतिम आनंद स्वीकार कर लेना। सचमुच बड़ा ही अद्भुत है। शरद से कही हुई हंसा ताई की पंक्ति "क्या करूं नारियां मेरे कलेजे का टुकड़ा है मैंने उसको पालने में कोई कसर नहीं छोड़ी भले ही गांव भर और समाज में इस कलमुहीं ने मेरी जरा सी भी इज्जत नहीं छोड़ी।.... नारियां आखिर मेरे जिगर का टुकड़ा है"5 हंसा ताई का अपने पुत्र के प्रति जो अनुपम प्रेम है उसकी प्रतीक है । शायद माता-पिता को परमात्मा का दर्जा इसीलिए दिया गया है क्योंकि वह पुत्र की हर बड़ी से बड़ी गलती को क्षमा कर देते हैं ।

कहानी में हंसा का पुत्र नारसिंह तथा भतीजा शरद सिंह दोनों समांतर पीढ़ी के है । एक ओर हंसा का भतीजा अपने से बड़ों का आदर करता हुआ दिखाई देता है। वहीं दूसरी ओर नारसिंह बुद्धिहीन होने के साथ अपनी बीवी के इशारों पर नाचता हुआ दिखाई देता है। दोनों पात्र युवा वर्ग के दो भिन्न भिन्न रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक ओर कर्तव्यनिष्ठ शिक्षित एवं वृद्ध जनों का आदर करने वाला पात्र शरद है, दूसरी ओर मंदबुद्धि तथा कायर स्वभाव वाला पात्र नारसिंह है। इस तरह कहानीकार एक बात स्पष्ट कर देता है कि आधुनिक शिक्षा पर संस्कार हीन होने के जो आरोप लगाए जा रहे हैं वह सही नहीं हैं। क्योंकि संस्कार चरित्र की वस्तु है। यह नहीं कहा जा सकता कि संपूर्ण शहरी युवा वर्ग जो शिक्षित है बुजुर्गों का अपमान नहीं करता, ठीक उसी तरह जिस तरह यह नहीं माना जा सकता कि संपूर्ण ग्रामीण वर्ग जो अनपढ़ है बुजुर्गों का सम्मान नहीं करता है। बुजुर्गों के सम्मान की तुला शिक्षा ना होकर संस्कार है। जहां संस्कार है वहां मानवीय गुणों की उपस्थिति है । दूसरी ओर इन्हीं मानवीय गुणों की क्षति का मुख्य कारण लोभ है, जहां लोभ है वहां सभी संस्कार ताक पर रख दिए जाते हैं। यह कहानी हमारे भारत की मूल संस्कृति ग्रामीण संस्कृति पर आधारित है जहां ना वैश्वीकरण है ना पूंजीवादी व्यवस्था है। तो फिर बुजुर्गों की इस दशा का जिम्मेदार कौन है? कहानीकार ने कारण स्पष्ट किया है कि जब चरित्र में लोभ नामक विष आता है तब कोई और विष जरूरत नहीं होता। लोभ नामक विष से परिवार की आत्मा मृत हो जाती है । हमारे पुराणों में सादा जीवन उच्च विचार की धारणा है। किंतु समय के साथ उसे विस्मृत किया जा रहा हैं। इच्छाओं के जंगल में युवा वर्ग इस कदर खो गया है कि वापस निकल पाना असंभव-सा प्रतीत होता है । अधिक से अधिक प्राप्त कर लेने की इच्छा समय के साथ बलवती होती चली गई है। सादगी की बातें मात्र पुस्तकों में लिखे विचारों तक सिमट कर रह गई हैं। पहले के

समय में बुजुर्गों से पैतृक अधिकार के नाम पर संपत्ति छीनी जाती थी । किंतु आज उनके अस्तित्व पर भी प्रश्न उठते देख सकते हैं । शरद के लौट जाने के बाद रेवा द्वारा कही गई यह पंक्ति इसी बात की द्योतक है "तू यहां क्यों पड़ी है तेरा धणी तुझे ले जाने आया था तो गई क्यों नहीं?"6 आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व कथा सम्राट प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर में वृद्ध पात्र खालाजान के साथ जुम्मन की पत्नी करीमन इसी तरह की कड़वी बातें सुनाती है "बुढ़िया ना जाने कब तक जीएगी। दो तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया मानो मोल ले लिया है!"7 वृद्धजनों के अस्तित्व पर उठते प्रश्नों को प्रेमचंद की और भी कहानियों में देखा जा सकता है जैसे बूढ़ी काकी कहानी। जहां बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा संपन्न और बुद्धिजीवी वर्ग से संबंधित होते हुए भी वृद्धा काकी के प्रति संवेदन शून्य व्यवहार करते हैं। बेटों वाली विधवा ,माता का हृदय आदि कहानियां वृद्धों की समस्या पर आधारित कहानियां है । जहां वृद्धजनों के प्रति संवेदन शून्य व्यवहार का मुख्य कारण उनकी संपत्ति का लोभ है। हंसाताई की कहानी को भी इसी परंपरा की कहानी माना जा सकता है। जहां वृद्धों की समस्या का मुख्य कारण आधुनिकीकरण या पूंजीवादी सभ्यता ना होकर परिवार के सदस्यों की लोभ प्रवृत्ति है-

लोभात्क्रोधः प्रभवति लोभात्कामः प्रजायते ।
लोभान्मोहश्च नाशश्च लोभः पापस्य कारणम् ।। 27 ।। 8

(लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है, लोभ से कामना, यानी और अधिक अर्जित करने की इच्छा, जागृत होती है, लोभ से व्यक्ति मोह या भ्रम में पड़ता है, और उसी से विनाश की स्थिति पैदा होती है; वस्तुतः लोभ पाप का कारण है।)

स्पष्ट है कि किसी भी पाप का मुख्य कारण मनुष्य की लोभ वृत्ति है, जो मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारण उत्पन्न होती है। लोभ ही वह वृत्ति है जिसके अधीन होकर प्राणी दूसरे प्राणी के साथ असमान व्यवहार करता है एवं स्वयं को केंद्र मानकर चलना चाहता है। वर्तमान में किसी भी जाति समुदाय अथवा लिंग के आधार पर किया जाने वाला असमान व्यवहार तथा मुख्य धारा द्वारा किया गया खुद को उत्कृष्ट एवं उत्तम साबित करने वाला व्यवहार इन्हीं मानवीय गुणों का ह्वास है। आवश्यकता इस बात की है कि मानवीय मूल्यों को उत्कृष्टता तक पहुंचाया जाए ताकि किसी भी तरह की विमर्श की स्थिति पैदा ही ना हो ।

कहानी में लेखक स्पष्ट करता है कि कानून द्वारा दी जाने वाली मदद या अधिकार का भी हम अपने लोभ के वशीभूत होकर अनुचित प्रयोग करने से डरते नहीं हैं नारसिंह द्वारा पुलिस में गलत रिपोर्ट करवाना इसी का उदाहरण है बहू द्वारा बार-बार अपनी मां समान सास का अपमान करना उसके लिए बहुत सरल है। छोटी-छोटी बात पर उसे प्रताड़ित करना रेवा के लिए महज़ एक मामूली बात है। यहां हंसाताई का साथ उसका पुत्र नारसिंह भी नहीं देता। वह पुत्र जिस की शादी के लिए मां ने इतने कष्टों को देखा था । आज वही पुत्र मां से नजरें चुराने लगा। सच में देखा जाए तो पुत्र स्वयं पुत्र वधू के अधीन है। उसके पास ना अपनी सोच है ना अपना व्यवहार वह जब रेवा द्वारा अपनी मां की पिटाई देखता है, तो चुप हो जाता है। ताकि कहीं

उसकी भी पिटाई ना हो जाए। पाठक को आश्चर्य तब होता है जब वही पुत्र सरकारी अनुदान द्वारा मकान पक्का करवाते समय अचानक समझदार सा दिखाई देने लग जाता है। यह बौद्धिक कुटिलता नहीं तो और क्या है? पाठक इस विचार में पड़ जाता है कि मंदबुद्धि वाला इंसान कैसे सरकारी अनुदान की सहायता से अपने मकान को पक्का बनवा सकता है जबकि सरकारी अनुदान पाने के लिए तो कुशाग्र बुद्धि की आवश्यकता होती है। प्रश्न उठता है जब रेवा मां को घर से बाहर निकलने पर मजबूर करती है तो पुत्र इसी कुशाग्र बुद्धि का उपयोग करते हुए उन्हें क्यों नहीं पुनःघर ले आता। क्या कारण है कि वह अपनी मां के प्रति सहानुभूति व्यक्त नहीं कर पाता एवं उसके अधिकारों की लड़ाई नहीं लड़ता। वह अपनी मां को क्यों लेकर आने में असमर्थ है? संपूर्ण कहानी में मां के प्रति होने वाले असंवेदनशील व्यवहार का दृष्टा पाठक साक्षी बना रहता है।

हंसा ताई कहानी में स्त्री ही स्त्री की प्रताड़ना का मुख्य कारण है। जहां बहू के रूप में रेवा एक स्त्री अपनी सास को पीड़ित करते हुए दिखाई देती है वहीं सास हंसा के रूप में स्त्री पीड़ित होते हुए दिखाई देती है। प्रश्न उठता है कि जब एक स्त्री ही दूसरी स्त्री को सम्मान नहीं दे सकती तब कैसे वह पुरुष वर्ग से अपने प्रति सम्मान की कल्पना भी कर सकती है। कभी बहू बनकर सास को प्रताड़ित करना कभी सास बनकर बहू को प्रताड़ित करना कहां तक उचित है।

जब संपूर्ण गांव हंसा के पुत्र एवं पुत्रवधू से परेशान होकर अंततः उन्हें मारने की कामना से पूरा गांव उन पर आक्रमण करता है जिसमें पुत्र एवं पुत्रवधू बुरी तरह घायल हो जाते हैं तब यही मां अपने पुत्र को सीने से लगाकर दवाखाने ले जाती है। कामना करती है कि फिर से मेरे पुत्र और पुत्रवधू ठीक हो जाएं तथा मेरा घर पूर्ण हो जाए। "उनको अभी भी आस है कि उसकी बहू और बेटा बहुत जल्दी ठीक हो जाएंगे और फिर से उसका घर हरा भरा हो जाएगा।"9

इस प्रकार मां के स्नेह क्षमाशीलता तथा ममता की कहानी है 'हंसाताई' की कहानी। जो समाप्त होते-होते यह संदेश देती हैं कि मां हर समय हर स्थिति में अपने पुत्र के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए भी तत्पर है आवश्यकता है पुत्र द्वारा इस बात को समझने का प्रयास किया जाए कि हमारा हित हमारे माता-पिता की सेवासुश्रुषा करने में है। यदि हम उनकी सेवा अपनी व्यस्तता के चलते ना कर पाए तो कम से कम उन्हें दुखी तो ना करें। उनके सम्मान की रक्षा करें क्योंकि उनसे बड़ा

हितैषी संपूर्ण विश्व में कोई नहीं है।

संदर्भ सूची

1. 'वांग्मय' पत्रिका, अंक जनवरी-मार्च 2021, पृ.93
2. वही पृ.96
3. वही पृ.93

4. वही पृ.93
5. वही पृ.97
6. वही पृ.98
7. 'मुंशी प्रेमचंद:विशिष्ट कहानियां' संपादन कृष्णदेव झारी, शारदा प्रकाशन, पृष्ठ 142
8. नारायणपण्डितसंगृहीत 'हितोपदेश'
9. 'वांग्मय' पत्रिका, अंक-जनवरी मार्च 2021, पृ.99

****